नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

# महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

## जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : .....

प्रकाशनार्थ

दिनांक : 23.05.2016

## योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति सप्त दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन

शिक्षा प्रशासन शिक्षा–व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा है। शिक्षण संस्थाओं का विकास एवं निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति बिना प्रशासन एवं अनुशासन के सम्भव नही। संस्था, प्रशासन और प्रबन्धन में समन्वय एवं सामन्जस्य से ही शिक्षण संस्था का सही दिशा में विकास सम्भव है। हर संस्था का स्वरूप अलग–अलग दिखाई देता है क्योंकि यह वहॉ के प्रशासन पर निर्भर करता है। संस्था का प्रशासन एवं अनुशासन जैसा होगा संस्था का स्वरूप वैसा ही विकसित होगा। प्रबन्धन, प्रधानाचार्य एवं शिक्षक का समन्वित प्रशासन ही संस्था का समग्र विकास करता है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल–धूषण में **योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति सप्तदिवसीय कार्यशाला** में **''शिक्षा में प्रशासन''** विषय पर बोलते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग की **एसोसिएट प्रोफेसर डॉ सुषमा पाण्डेय** ने कही।

डॉ सुषमा पाण्डेय ने कार्यशाला के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षक भी एक प्रकार का प्रशासक है किन्तु वह ऐसा प्रशासक है जिसका प्रशासकत्व उसके व्यवहार में दिखना चाहिए। शिक्षक का प्रशासन उसकी बौद्धिक योग्यता, विषयगत ज्ञान, अध्ययन–अध्यापन पद्धति उसका नैतिक–चारित्रिक बल पर आधारित होता है। इसी प्रकार संस्था का वास्तविक स्वरूप संस्थाध्यक्ष अर्थात प्रधानाचार्य के आचरण – ब्यवहार पर निर्भर करता है। वह जहाज की कप्तान की तरह होता है। संस्थाध्यक्ष की योग्यता, उसकी दृष्टि और लक्ष्य के प्रति उसके आग्रही होने पर ही संस्था के विकास का स्वरूप निर्भर होता है। अतः शैक्षिक प्रशासन की आवश्यक शर्त है कि प्रधानाचार्य एवं शिक्षक की चयन–प्रक्रिया पारदर्शी हो। योग्यतम का ही चयन होना चाहिए।

डॉ सुषमा पाण्डेय ने आगे कहा कि शिक्षक प्रशासन का एक और आवश्यक अंग अनुशासन है। अनुशासन पैदा करना शिक्षण संस्था का ही कार्य है। थोपा गया अनुशासन स्थायी एवं प्रभावी नही होता। शिक्षक, शिक्षार्थी और प्रबन्धन की दृष्टि से अनुशासन का बहुआयामी स्वरूप शिक्षा परिसर में स्थापित होना चाहिए। शिक्षा प्रशासन और उत्पादन इकाईयों के प्रशासन में मौलिक अन्तर है। हमें शिक्षा व्यवस्था में प्रशासन एवं प्रबन्धन का स्वरूप उद्योगों अथवा उत्पादन इकाईयों की तरह विकसित करने से बचना

होगा। शिक्षा–व्यवस्था मानव निर्माण की आधार शिला है। अतः यहॉ प्रशासन एवं प्रबन्धन पदार्थों की उत्पादन इकाईयों जैसा नही हो सकता । यहॉ प्रशासन एवं प्रबन्धन का मौलिक स्वरूप होना चाहिए। नौकरशाही एवं पुलिस प्रशासन का स्वरूप यहॉ कारगर नहीं हो सकता।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में योग–प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया। तृतीय सत्र में पाठ्ययोजना निर्माण की प्रक्रिया बतलाई गई। प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव ने अतिथि का स्वागत एवं आभार किया। बी0एड0 विभाग के सभी प्राध्यापकों ने समानान्तर सत्रों का संचालन किया।

**(प्रकाश प्रियदर्शी)**
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी